चित्रः गूगल से साभार

क्या मिलेगा कंटकों से

क्या मिलेगा कंटकों से, भर रहा है राह मेरी।
पर नहीं तू सुन सकेगा, देख लेना आह! मेरी।।

धीर हूँ गंभीर हूँ मैं , साहसी हूँ सिंधु जैसा।
ले न पाएगा कभी तू, दक्षता की थाह मेरी।।

है नहीं चिंता तनिक भी, नित भले घेरें विरोधक।
ईश मेरा कर रहा है, हर समय परवाह मेरी।।

रोप ले पौधा हृदय में, प्यार का अच्छा रहेगा।
भर उजाला जिंदगी को, क्यों बनाए स्याह मेरी??

नफरतों की नागफनियाँ, क्यों उगाई जा रही हैं?
काट इनको प्रीति बो तू, कर भला है चाह मेरी।।

इं० संतोष कुमार सिंह
मथुरा